M.A. II SEMESTER CC-5

01
56

इकाई (1) महाकाव्य

Qn.] द्वयाश्रयकाव्य का आलोचना प्रस्तुत करें,

आलोचना →

Ans— इस महाकाव्य की कथावस्तु एक दिन की प्रतीत होती है। यद्यपि कवि ने कथा को विस्तृत करने के लिए ऋतुओं तथा उन ऋतुओं में सम्पन्न होनेवाली क्रीड़ाओं का व्यापक चित्रण किया है। तो भी कथा का आयाम महाकाव्य की कथावस्तु के योग्य बन नहीं सका है। विज्ञप्ति निवेदन में दिग्विजय का चित्रण आ गया है, पर यह भी कथा-प्रवाह में साधक नहीं है। कथा की गति वर्तुलाकार सी प्रतीत होती है और दिग्विजय का चित्रण उस गति में मात्र बुल-बुलाकर रह गया है। अतः संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि इस महाकाव्य की कथावस्तु का आयाम बहुत छोटा है। एक अहोरात्र की घटनाएं रस संचार करने की पूर्ण क्षमता नहीं रखती है।

नायक का सम्पूर्ण जीवन-चरित समक्ष नहीं आ पाता है। उसके जीवन का उतार-चढ़ाव प्रत्यक्ष नहीं हो पाया है। अतः धीरोदात्त नायक के चरित का समग्रतया उद्घाटन न होने के कारण कथावस्तु में अनेकरूपता का अभाव है। अवान्तर कथाओं की योजना भी नहीं हो पायी है। विज्ञप्ति में निवेदित घटनाएँ नायक के चरित का अंग बनकर उससे पृथक जैसी प्रतीत होती है। अतएव कथावस्तु में शैथिल्य दोष होने के साथ कथानक की अपर्याप्तता नामक दोष भी है।

वस्तु वर्णन की दृष्टि से यह महाकाव्य सफल है, ऋतु वर्णन, सन्ध्या, उषा, प्रातः एवं युद्ध आदि के दृश्य सजीव हैं। व्याकरण के उदाहरणों को

समाविष्ट करने के कारण कृत्रिमता अवश्य है, पर इस कृत्रिमता ने काव्य के सौन्दर्य को अपकर्षित नहीं किया है। प्राकृतिक दृश्यों के मनोरम चित्रण और प्रौढ़ व्यंजनाओं ने काव्य को प्रौढ़ता प्रदान की है। इसमें सन्देह नहीं कि इस शास्त्रीय काव्य में व्याकरण के जटिल-जटिल नियमों के उदाहरण उपस्थित करने के हेतु कथानक में सर्वाङ्ग पूर्णता का सन्निवेश होना कठिन हो गया है। वस्तु विन्यास में प्रबन्धात्मक प्रौढ़ता आडम्बरयुक्त उदाहरणों के कारण नहीं आने पाती है फिर भी कथानक में चमत्कार और कमनीयता का अभाव नहीं है।

यह काव्य कलावादी है। इसमें शब्दों क्रीड़ा भी वर्तमान है। सुन्दर-सुन्दर वर्णनों की योजना कर कवि ने उक्त कथावस्तु में अलंकार-वैचित्र्य और कल्पना शक्ति के विनियोग द्वारा चमत्कृत करने की सफल योजना की है। कवि हेमचन्द्र की अनेक उक्तियों में स्वाभाविकता, व्यंग्य तथा पाण्डित्य भरा हुआ है। कुमारपाल की दिनचर्या पाठकों को सुसंस्कृत जीवन बनाने के लिये प्रेरणा देती है। जिनेन्द्र वन्दन एवं अन्य धार्मिक कार्यों में राजा का प्रतिदिन भाग लेना वर्णित है। इस काव्य में केवल राजा के विलासी जीवन का ही वर्णन नहीं है, अपितु उसके कर्मठ एवं नित्य कार्य करने में अप्रमादी जीवन का चित्रण है। नायक का चरित्र उदात्त और भव्य है। उनके महनीय कार्यों का सटीक वर्णन किया गया है।